व्याख्यान -5 | Date: / /

स्नातक तृतीय खंड

07.07.2020

मैथिली कथा साहित्यक परम्परा

मानव जीवनक जटिलता, परिस्थितिक अनुभूति, भावनात्मक एकरूपता, विषमता, विविधता के कथा एहन रूपमे व्याख्या करैत अछि जे अपन व्यापकताक कारणें अत्यन्त आकर्षक साहित्य बनल अछि। एहि उपर्युक्त विषयक आरम्भिक व्याख्यानादि सँ हम बता रहल छी जे कथाक उत्स संस्कृत साहित्यादि सँ रहल अछि। संस्कृत साहित्य मे बाणभट्टक कादम्बरी आ दण्डीक दशकुमार चरित संस्कृत गद्यात्मक कथा साहित्यक एक प्रौढ़ साहित्यिक स्वरूप प्राप्त कयने अछि। कथा आधुनिक युगक गद्यक महत्वपूर्ण विधा थिक। कहल गेल अछि जे " गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। अर्थात साहित्य सृजनकर्ताक हेतु गद्य कसौटी अछि। गद्य मे कोनो कथावस्तुक कथानक सुसंगठित एवं विकसित रहैत अछि। एहि विकसित स्वरूपकें कथा कहल जाइत अछि।

प्राचीन भारतीय कथा साहित्यक अन्तर्गत जे सब परम्परागत कथाक चर्चा मैथिली कथाक पृष्ठभूमि मे आयल अछि ताहिमे निहित कथा सभ अपन युगक अनुरूप एही आधारित अछि। स्वरूप एहि साहित्य ...

(क) वैदिक कथा (ख) संस्कृत कथा
(ग) पालि कथा (घ) प्राकृत कथा
(ङ) अपभ्रंश कथा

ऋग्वेद मे जे कथा सभ प्राप्त होइत अछि ओ कथा बीजक रूपमे अछि। वैदिक कथा मे बहुत अंशमे गाथाक प्रचुरता देखल गेल अछि। ऋग्वेद कें कथा साहित्यक उद्गम स्थल अथवा बीज रूपमे स्वीकार कयनिहार विद्वान लोकनि कहैत स्वीकार करैत छथि जे मैथिली साहित्य पर आधारित अछि परम्परा अछि। एहि सम्बन्धमे सभसँ महत्वपूर्ण बात ध्यान राखय पड़त अछि जे सब परवर्ती आख्यान सभ प्रायः प्रत्येक आधुनिक भारतीय भाषाक साहित्यक बीज रूपमे प्राप्त होइत। एहि तथ्यक विस्तार सँ वर्णन 'उपनिषद' 'निरुक्त', वृहददेवता, कात्यायन सर्वानुक्रमणी तथा पुराण आदि मे प्राप्त होइत अछि।

क्रमशः

डॉ॰ पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक